इस्लाम की हकीकत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

* मिश्कात, रावी अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने ये आयत पढी जिसका तरजुमा है- जिस को अल्लाह हिदायत देने का फैसला करता है उसके सीने को इस्लाम के लिये खोल देता है ये आयत पढने के बाद रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की जब नूर सीने मै दाखिल होता है तो सीना खुल जाता है, लोगो ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उसकी कोई महसूस निशानी है जिस के जरिये पहचान लिया जाये? आपﷺ ने फरमाया हा टस की महसूस निशानी ये है की आदमी का दिल इस दुनिया से उचाट हो जाता है और हमेशगी के घर का वो चाहने वाला बन जाता है और मौत आने से पहले मौत की तैयारी मै लग जाता है. मतलब जिस शख्स के दिल मै इस्लाम की हकीकत उतर जाती है तो उसका दिल इस खत्म होने वाली दुनिया से दूर भागने लगता है और

आखिरत का चाहने वाला बन जाता है, और मौत आने से पहले नेक काम करने लग जाता है.

* मिश्कात, रावी जाबिर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की मै अपनी उम्मत के बारे मै जिस चीज से सबसे ज्यादा डरता हु वो ये है की मेरी उम्मत अपनी ख्वाहिशो का कहा मानने लगेगी और दुनिया हासिल करने के लिये लम्बे चौडे मनसूबे बनाने मै लग जायेगी तो उसके अपनी ख्वाहिशे नफ्स का कहा मानने का नतीजा ये होगा की वो हक से दूर हो जायेगी और दुनिया को बनाने के मनसूबे आखिरत से गाफिल कर देगे, ऐ लोगो ये दुनिया कूच कर चुकी है, जा रही है और आखिरत कूच कर चुकी है आ रही है, और उनमे से हर एक के मानने वाले है जो उससे मुहब्बत करते है, तो ये अच्छा होगा की तुम दुनिया के चाहने वाले ना बनो, तुम इस वकत अमल के घर मै हो और हिसाब का वकत नही आया है, और कल तुम हिसाब के घर (आखिरत) मै होगे जहा अमल का कोई मौका ना होगा.

* मिश्कात

रसूलुल्लाहﷺ ने एक आदमी को नसीहत करते हुवे ये बात फरमाई तुम पांच चीजो को पांच चीजो से पहले गनीमत जानो, अपनी जवानी को बूढापा आने से पहले, और अपनी सेहत को बीमारी से पहले और अपनी खुशहाली को अपनी मोहताजी से पहले, और अपनी फरागत को मशगूलियत से पहले, और अपनी जिन्दगी को मौत से पहले. यानी जवानी मै खूब अमल करो, क्युकी सख्त बुढापे की हालत मै चाहने के बावजूद भी कुछ नही कर सकोगे, और अपनी तन्दरूस्ती को आखिरत की तैयारी मै लगावो, हो सकता है की बीमार पड जावो और कुछ ना कर सको, और जब अल्लाह खुशहाली दे तो उससे आखिरत का काम लो, हो सकता है की तुम गरीब हो जावो, और फिर अल्लाह की राह मै माल खर्च करने का मौका ही ना रहे, गर्ज ये की इस पूरी जिन्दगी को गनीमत जानो और इस को अल्लाह के काम मै लगाओ वर्ना मौत आकर अमल के सारे मौको को खत्म कर देगी.